अनमोल खजाना

• विजयदान देथा

अन्ताक्षरी

कहानी माला – 20

अनमोल खजाना

● विजयदान देथा

सूअर के पीछे बीस कोस तक घोड़े दौड़ाये, पर वो राजा के हाथ नहीं आना था, सो नहीं आया। राजा को बुरा तो बहुत लगा, पर जानवर राजा की आन–बान क्या जाने! मुकुट टेढ़ा हो गया। होंठ पपड़िया गये। प्यास और थकान से उसे चक्कर आने लगा। सूरज सर के ऊपर आग बरसा रहा था। अगर राजा पर भी ऐसी आफत आने लगी तो फिर उसमें और परजा में फर्क ही क्या रहा। उसने दिक होकर हथियार डाल दिये तो सब रुक गये।

दाँत पीसते बोला, 'सूअर को गोली मारो और जल्द-से-जल्द पानी का बन्दोबस्त करो, वरना यह प्यास मेरी जान ले लेगी। फौरन पानी न लाये तो तुम सबको जान से हाथ धोना पड़ेगा।' अपने सरों पर तलवार नाचती देख सब थर–थर काँपने लगे।

सहसा उन्हें 'अलगोजे'* की मीठी तान सुनायी दी। सामने की घाटी से वह सुरीली आवाज आ रही थी। राजा को जैसे अंगारा छू गया। उसकी प्यास और भड़क उठी। बोला, 'मेरी जान पर बनी है और इसे मस्ती सूझ रही है! कौन है यह गुस्ताख? सर कलम कर दो उसका।'

सेनापति ने कहा, 'शायद इसके पास पानी हो। यह तो मौके पर खूब काम आया।'

सवारों ने अलगोजे की आवाज की दिशा में घोड़े मोड़े ही थे कि राजा ने कहा, 'पानी लाने में ज्यादा वक्त लगेगा। मैं भी साथ चलता हूँ।'

घाटी के उस पार 'खेजड़ी' की छाँव–तले एक गड़रिया अलगोजा बजा रहा था। अपने में खोया हुआ। इर्द-गिर्द पाँच-सात भेड़ें चर रही थीं। खेजड़ी की एक डाली से छागल लटक रही थी। एक सवार ने आगे बढ़कर छागल उतारी। वो उसी तरह अलगोजा बजाता रहा, पर जब उसने पानी पीने के लिए मुकुटधारी आदमी को झुके

* अलगोज़ा—एक प्रकार की बाँसुरी

हुए देखा तो फौरन अलगोजा रखकर उधर लपका। उसने सवार के हाथ से छागल छीन ली। कहा, 'प्यास से मौत आती कि नहीं, पर इस तरह पानी पीया तो यह हरगिज नहीं बचेंगे।'

राजा को गुस्सा तो बहुत आया, पर चुप लगा गया। गड़रिया उसे बाँह से पकड़कर छाया में ले गया। थोड़ी देर बाद पसीना सूखने पर उसके हाथ—मुँह धुलाये। मुँह पर पानी के छींटे मारे। रुक-रुककर एक-एक घूँट पानी पिलाया और फिर छागल उसके हवाले कर दी। वो एक ही साँस में आधी छागल खाली कर गया। अब कहीं उसके जी-में-जी आया। राजा की आँखों में ज़िन्दगी का समन्दर लहराने लगा।

सात-आठ घुड़सवारों को देखा तो एक गड़रिया पहाड़ी से भागा-भागा आया और लाठी पर ठुड्डी टिकाकर चुपचाप खड़ा हो गया।

राजा ने अपनी जान बचान वाले को देखा—भरपूर लम्बा। हट्टा-कट्टा। कहा, 'आज तूने मेरी जान बचायी है। मैं बहुत खुश हूँ। बोल, क्या माँगता है?'

वो भूत-सा आदमी कुछ समझा नहीं। किसी प्यासे को पानी पिलाया, इसमें माँगने की क्या तुक है! पर कुछ-न-कुछ जवाब तो देना ही था। अबूझ बच्चे की तरह बोला,

'मुझे कोई कमी नहीं, फिर आपसे क्या मागूँ!'

तब पहाड़ी से आये गड़रिये ने कहा, 'अन्नदाता, यह तो निरा बुद्धू है। पाँच भेड़ों के पीछे सारे दिन भटकता है। यह बेचारा हजूर से क्या माँगेगा! जो सरकार की इच्छा हो, बगसीस कर दें।'

बुद्धू ने फौरन जवाब दिया, 'जब मैं कुछ लेना ही नहीं चाहता तो आपकी बगसीस मेरे किस काम की! मैंने बाप से भी हिस्सा नहीं लिया, फिर दूसरे के सामने क्यूँ हाथ फैलाऊँ! वैसे, मुझे किसी चीज़ की ज़रुरत भी नहीं।'

दरबार की तो रंगत ही न्यारी। लोगों की जबान पर ऐसे शब्द भी बसते हैं, उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा। उसे ये बोल शहद से मीठे लगे, इतने बरस खुशामद, छल—कपट, याचना, झूठ, निन्दा और चुगलियाँ सुन-सुनकर उसके कानों की तासीर ही बदल गयी। धमकानेवाले को डाँटते हुये कहा, 'क्यूँ बेचारे को बेकार डरा रहे हो! कुछ न लेना चाहे तो इसकी मरजी।

राजा ने सवारों को हुक्म दिया, 'कुछ रुककर यहाँ से चलेंगे। तब तक इस खेजड़ी की छाया में आराम कर लें। इस मूरख की बातें मुझे बहुत अच्छी लगीं। इसके मुँह से कुछ और सुनना चाहता हूँ।'

घोड़ों को चरने के लिए छोड़कर सभी खेजड़ी-तले आ बैठे।

वो गावदी बोला, 'भेड़ों को पानी पिलाने का वक्त हो गया। पहले इन्हें पानी पिला लाऊँ। लौटकर कुछ देर अलगोजा बजाऊँगा। आपके आने से खलल पड़ गया।'

किसी के कहने-सुनने की बाट जोहे बिना वो भेड़ों को लेकर चल पड़ा। दूसरा गड़रिया हँसते-हँसते बोला, 'हजूर इसकी करतूतें देख-देखकर थक जायेंगे, पर उनका अन्त नहीं आयेगा। देस के मालिक को छोड़, कुछ भेड़ों को पानी पिलाने चल दिया! एक दफा जो जँच गयी वह जंच गयी। फिर यह भगवान की नहीं सुनता। पर एक बात तो उसकी-पीठ पीछे भी माननी पड़ेगी कि सताता कभी किसी को नहीं। बाँगडू पन से हमेशा खुद ही नुक्सान उठाता है, दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ता। इस पत्थर को कौन समझाये! अब भी देखिए, कछुए की तरह कैसे धीरे–धीरे आ रहा है! चिरमिखी कहीं का!'

राजा अपने ही खयालों में खोया था। उसकी आधी–दूदी बातें सुनी और आधी–दूदी सुनी ही नहीं। उसके पास आने पर वो दूसरा गड़रिया आगे बोला, 'अब तेरे अलगोजे को आग लगा। पहले, अन्नदाता जो पूछें, उसका जवाब दे'।

राजा उसे टोकते बोला,'नहीं ,नहीं। तू बीच में गड़बड़ मत कर। जो इसकी मरजी हो, करने दे।

वो अलगोजे की मीठी तान में ऐसा डूबा, जैसे समाधि लगायी हो। राजा एक नयी ही दुनिया में पहुँच गया। यह संगीत है कि जादू! अलगोजा रुकने पर फिर हलचल हुई।

दूसरे गड़रिये ने लम्बी साँस छोड़ी। बोला,'यह अलगोजे का गुण भी इसमें खूब है। कब सीखा, किसने सिखाया, यह कोई नहीं जानता। पूछें तो उलटा सवाल करता है कि झरनों को बहना किसने सिखाया? हवा को चलना किसने सिखाया? कोयल को गाना किसने सिखाया? अन्नदाता, इसके पागलपन के आगे भला कोई क्या करे!

राजा की उस वक्त यह हालत थी कि अगर सारी रियासत के बदले भी उसे वो पागलपन मिल जाता तो वो खुशी-खुशी यह सौदा कर लेता। साथ-ही-साथ राजा को यह एहसास हुआ कि वो भी किसी से छोटा है। वो तो समझता था कि राजा होने से बड़ी बात और क्या हो सकती है!

एक सवार ने आगह किया,' अन्नदाता, आज तो इस कमसल सूअर ने जाने कब का बदला लिया! काफी दिन ढल गया। अब चलना चाहिए।'

अन्नदाता ने अपनी मरजी दरसायी,'तुम लोगों को जल्दी हो तो जाओ। मैं आज की रात यहीं रहूँगा।'

'भला जूते पाँवों को छोड़ कहाँ जायेंगे, अन्नदाता! पर रानी साहिबा को खबर देने किसी को जाना पड़ेगा।'

अलगोजे को चमड़े के खोल में खोंसते वो बोला,'फिर आप काहे के राजा हैं! एक रात भी बिना इत्तला किये आप बाहर नहीं रह सकते! मैं एक नाकुछ गड़रिया हूँ, पर हूँ अपनी मरजी का मालिक। समूची कुदरत ही मेरा घर है। दूसरे गड़रिये ने सोचा, यह ढोर आज सारी बिरादरी को ले डूबेगा। वो उसके करीब जाकर धीमे-से बोला, 'गधा कहीं का! कब से बकबक किये जा रहा है! ज़रा तमीज रख। क्या बड़े आदमियों से इस तरह बात की जाती है?'

पर वो पूरा गधा निकला। उसके भेजे में कुछ नहीं घुसा। बोला, 'आदमी को छोटा–बड़ा क्या! अपनी-अपनी जगह सब बड़े हैं। मैं तो वही बात करुँगा, जो मैं जानता हूँ। अपनी-अपनी समझ।'

उसने सोचा, अब इससे सर लगाने में अपने सर की खैर नहीं। अन्नदाता राम जाने क्यूँ उलटे उसी पर बिगड़ते हैं! वो अपनी भेड़ों को सँभालने के बहाने वहाँ से खिसक गया।

आखिर राजा ने बात शुरु की। कहा,' आज की रात हम सब तुम्हारे मेहमान हैं। पलकों पर बैठाये तो तेरी मरजी, मान न मान मैं तेरा मेहमान समझे तो तेरी मरजी। जो तू खिलायेगा, वो ही खायेंगे। हमारी खातिरदारी की चिन्ता मत करना'।

वो खुशी से छलकते बोला,'मुझे खुशी क्यूँ न होगी! आपकी खातिरदारी के लिए

मुझे चिन्ता की क्या जरुरत। कुदरत में खुराक बहुत है और झरनों में ठण्डा पानी। सोने को धरती और ओढ़ने को आकाश। और क्या चाहिए! मेरे भाग कि जिन्दगी में पहली दफा मेरे मेहमान आये।'

फिर वो फल और कन्दमूल तोड़ लाया। बड़े उत्साह से रोटियाँ बनायीं। प्याज और मिरचों के साथ पत्तों पर परोसगारी की। छागल में झरने का पानी। सूरज डूबने से पहले-पहले सबको खाना खिला दिया। भेड़ों को पानी पिलाकर बाड़े में डाल दिया। फिर खुद खाने बैठा। सूरज डूब रहा था।

कुछ देर डूबते सूरज को एकटक देखता रहा। बोला, 'यह पट्ठा सूरज उगे तभी लाल और डूबे तभी लाल। आँखें खुली रखे तो आदमी कुदरत से बहुत कुछ सीख सकता है। कुदरत की पोथी में सारा ज्ञान भरा पड़ा है। घरवाले कहते हैं, मैं यूँ ही जिन्दगी गँवा रहा हूँ। कुछ काम-धाम नहीं करता। तंग आकर मैंने कहीं आना-जाना ही छोड़ दिया। किसी से कोई वास्ता न रखा। एक अरसे के बाद आज आपसे इतनी बक-बक की है।'

राजा ने कहा, 'और मैंने आज जाना कि ज़िन्दगी क्या है और जिसे मैं ज़िन्दगी समझता था, वो फकत धोखा है, और कुछ नहीं। मेरी आँखों का जाला आज ही कटा।'

गड़रिया बोला,'अब आप सोयें। मैं तारों सें बातें करुँगा। और बिना जवाब का इन्तज़ार किये वो कुछ दूर हटकर लेट गया।

राजा के दिल में अजीब उथल–पुथल मची थी। दरबार के संस्कार भस्म तो हो गये, पर नया विश्वास मुट्ठी में नहीं आया। न हुकूमत का मोह छोड़े बनता है, न गड़रिये की बातें सुनकर पहले की तरह हुकूमत करने को जी करता है इस जैसा दीवान मिल जाये तो राजा होना सारथक हो। पर यह मानेगा थोड़े ही। जिसे लालच, डर छू न गया हो, उसके आगे साम, दाम, दण्ड, भेद सब बेकाम हैं। क्या तरकीब करूँ! माया और सत्ता के मद को तब मानूँ, जब वो इस पर कुछ असर करे। यों जुगत भिड़ाते–भिड़ाते उसकी आँख लग गयी।

रात के आखिरी पहर में उसकी नींद उड़ गयी। नजर आप ही ऊपर

उठी—झिलमिल—झिलमिल चमकते तारे। पहली दफा यह नज़ारा देखा था। उसे लगा, इतने बरस यों ही गँवा दिये। उठकर चहलकदमी करने लगा। गड़रिया कहीं नज़र नहीं आया। अकेले ही पहाड़ी की ओर चल पड़ा एक—एक कदम पहाड़ी पर चढ़ते उसे ऐसा लगा, जैसे ज़िन्दगी की सच्ची ऊँचाई पर चढ़ रहा हो। सहसा बहते झरने का कल-कल नाद सुनायी पड़ा। सुनते—सुनते कदम आप ही चढ़ाई पर बढ़ चले। ठेट टेकरी तक। गड़रिया पहले से ही वहाँ बैठा था। सच, यह राजाओं का राजा है, जो ऐसे आनन्द को भोग रहा है।

उसकी आवाज़ सुनकर गड़रिये का ध्यान टूटा, राजा की ओर देखा। राजा बोला, 'तुझसे एक खास बात करनी है।'

'बात तो चलते-चलते भी हो सकती है। भेड़ों को चराने का वक्त हो गया।'

'समझ में नहीं आता, तुझे कैसे समझाऊँ! तुझ पर हूकूमत का ज़ोर नहीं जताता। माने तो हाथ जोड़कर अरज है, वरना तेरी मरजी। सच, मुझ पर आग में फँसे उन बछड़ों से भी ज़्यादा मुसीबत आयी है। तुझे अपना दीवान बनाना चाहता हूँ।'

वो उसका मतलब नहीं समझा। बोला, 'इस राज को छोड़कर मुझे इन्द्र का राज भी नहीं चाहिए जीते-जी की तो दूर, मैं मरकर भी यह ठौर नहीं छोड़ना चाहता।'

'मुझे बचाने के लिए तुझे चलना ही होगा। तुझसे मिलने के पहले मैं अपने राजमद में मगन था। कोई फिक्र नहीं थी, पर तुझसे मैं मिलकर एकदम कंगाल हो गया। अब तेरी समझ से सचमुच राज करना चाहता हूँ। अगर तूने ज्यादा जिद की तो मैं आत्माघात कर लूँगा।'

वो असमंजस में पड़ गया। राजा नीचे आने तक तरह—तरह की मिसालें देकर —उसे समझाता रहा, पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया। आखिर राजा ने कहा, 'बछड़ों को बचाने तो तू फौरन आग में घुस गया और मेरे लिए इतना क्या सोच रहा है! कहे तो मैं भी अरड़ाऊ, भेड़ों की तरह मिमियाऊँ।'

वो बेबस हो गया। उसे हाँ करनी ही पड़ी। राजा ने बचन दिया कि वो कभी उसके काम में दखल नहीं देगा। उसे अपनी मरजी मुताबिक कुछ भी करने की पूरी आज़ादी होगी।

गड़रिये ने साफ-साफ कहा, 'एक बरस से ज्यादा मैं किसी भी सूरत में नहीं रुकूँगा और अगर आपने कभी टोका या मेरा कहा टाला तो मैं उसी पल वापस आ जाऊँगा।'

उसी दिन से राजा ने राजपाट का सारा काम गड़रिए पर छोड़ दिया। खुद फकत कहने को राजा रहा और एकदम सादा जीवन बिताने लगा। उसे बेमन से राजा का काम सँभालना पड़ा। राजा यही चाहता था। राजा ने गुप्त खजाने की चाबियाँ तक उसके हवाले कर दी। गड़रिये के राज में चारों ओर सुख-शान्ति थी। न्याय की गंगा बहने लगी। अब राजघराने के लोग, दरबारी, सामन्त, ठाकुर कारिन्दे वगैरा कोई भी ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं कर सकता था। कहीं जुल्म और बेइन्साफी न हो, यह देखने के लिए वो खुद रात को भेस बदलकर घूमता। घर-घर उसके न्याय की चर्चा होने लगी। हुकूमत से जुड़े लोग अन्दर-ही-अन्दर गड़रिये से जलने लगे। राजा के डर से कोई मुँह नहीं खोलता था, पर सभी के नाकों दम आ गया। न रिश्वत, न लूट-खसोट, न बगसीत, न इनाम-इकरार, नामुराद गड़रिये को कहाँ से काटे और चीरे! राजा के आगे बस नहीं चलता। मजबूरन गम खानी पड़ती है। नहीं तो...!

जब सारा खजाना खाली हो गया तो लोंगो ने कान भरे, 'अन्नदाता, यों लुटाने से धरती की धूल भी नहीं बचती, फिर खजाने की क्या बिसात!'

राजा ने जवाब ने दिया, 'रैयत का पैसा रैयत के काम आ रहा हैं, इससे बहेतर उसका इस्तेमाल और क्या होगा!'

नायब दीवान ने कहा, 'पर अन्नदाता ने तो उन्हें गुप्त खजाना भी सौंप दिया। कुछ दिनों में उसे भी ठिकाने लगा देंगे। राम जाने, वे इतने पैसों का क्या करते हैं?'

इसके बावजूद राजा ने कोई ध्यान नहीं दिया। पर नायब-दीवान ने गड़रिये का पीछा नहीं छोड़ा। खोजते-खोजते आखिर सबकी मन-चाही हुई। अब मालूम हुआ कि आखिर इतना पैसा जाता कहाँ हैं। एक अँधेरी कोठरी में रोजाना घण्टों बन्द रहता है। बाहर निकलते ही बड़ा ताला लगा देता है। गुप्त खजाने में पीछे एक कौड़ी भी नहीं छोड़ेगा। यह सुराग तो खूब मिला। अब बचकर कहाँ जायेगा।

और उधर राजा भी मन-ही-मन उससे कुढ़ने लगा था। ग्यारह महीने होने को आये, मगर इस पर कोई असर ही नहीं! न रूप-जवानी के फेर में आया, न माया के फन्दे में फँसा, न सोने की चकाचौंध से अन्धा हुआ और न राजमद ही इसके सर चढ़-कर बोला। अगर ये खूबियाँ उसमें होतीं तो उसका नाम अमर हो जाता। उसकी रैयत उसे भूलकर गड़रिये के नाम की माला जपने लगी थी।

राजा अक्सर ऐसे ही खयालों में खोया रहता था। एक दिन नयाब दीवान ने हाथ जोड़कर अरज की, 'अन्नदाता, विश्वास करें तो एक बात कहूँ। कोई आदम-जाद माया से अछूता रहे, यह हो नहीं सकता। मैंने तो हजूर के डर से इतने दिन जिक्र नहीं किया, वरना कभी की पोल खुल जाती। अन्नदाता, माया की मार से कोई बच सकता है भला!'

राजा मन ही मन खुश हुआ और बोला, ''बात क्या है?''

उसने सारी बात खुलासा की। फिर बोला, 'अन्नदाता, रत्ती-भर भी बहम न रखें। गुप्त खजाने का सारा माल इस कोठरी में न मिले तो सर कलम कर लूँ।'

राजा को पूरा एतबार हो गया। हिदायत दी, 'बहुत होशियारी से काम करना है। अगर पाँचवें कान में भनक भी पड़ गयी तो वो पूरा खजाना वापस ठिकाने पहुँचा देगा। मैं खुद तलाशी लूँगा।'

बात-की-बात में सौ नामी सिपाही सज-धजकर तैयार हो गये। गड़रिये की हवेली के चौतरफ घेरा पड़ गया। राजा सातेक मन्त्रियों के साथ अचानक मुआयने के लिए जा धमका। गड़रिया सर मुकुट पहने कोठरी से निकल ही रहा था कि राजा पर उसकी नज़र पड़ी। उसने हड़बड़ाहट में ताला लगाया और सीधे राजा की ओर बढ़ा।

एक मन्त्री फुसफुसाया, 'अन्नदाता, बहुत सही वक्त पर आये हैं। चोर का दिल जागता है। भीतर पानी न मरता तो इस तरह घबराता क्यूँ?'

गड़रिये ने पास आकर राजा से पूछा, 'आज इधर रास्ता कैसे भूल गये?'

'जब तुम रास्ता भूल गये तो मेरा भूलना क्या गजब हो गया!'

सीधा आदमी ताने की टेढ़ी बात क्या समझे! चुपचाप खड़ा रहा। तब राजा को कहना पड़ा, 'इसमें तुम्हारा कसूर नहीं। यह माया है ही ऐसी। मेरा खयाल था कि

माया का जादू तुम पर नहीं चल सकेगा। यह मेरी भूल थी। मैंने आँखें मूंदकर तुम्हारा भरोसा किया। आज तक जिस गुप्त खजाने को कोई देख तक नहीं सका, वो मैंने तुम्हारे हवाले कर दिया। इसलिए नहीं कि उसे तुम अपने घर ले आओ।' राजा को उसकी बेईमानी में कोई शक न था।

नायब दीवान राजा के कान में फुसफुसाया, ''अन्नदाता का हुक्म हो तो कोठरी की तलाशी के लिए कहूँ?' राजा से इजाजत पाकर कोठरी की ओर इशारा करते बोला, इसकी तलाशी लो!''

सुनते ही गड़रिये के चेहरे का रंग उड़ गया। बोला, 'इसकी तलाशी न लें तो अच्छा है। तलाशी लायक इसमें कुछ भी नहीं है। फिर राजा की ओर देखते कहने लगा,'उस दिन आपने मुझे हाथ जोड़े, आज मैं हाथ जोड़ता हूँ, इसकी तलाशी न लें। इसमें आपके काम का कुछ नहीं।'

'तुम्हारी बात रखने के दिन लद गये। शराफत से दरवाजा खोल दो, वरना ताला तुड़वाना पड़ेगा।'

'इसकी नौबत नहीं आयेगी। मैं खुद खोले देता हूँ।'

उसने काँपते हाथों से दरवाजा खोला। सब लपककर भीतर गये। रोशनी करके कोना-कोना छान मारा, पर वहाँ कुछ न मिला। एक कोने में आटे का भातड़ा, खोली में रखा अलगोजा, रस्सी बुनने का ढेरा, पुराने कपड़े, फटे जूते, फटा साफा, फटा गमछा वगैरा रखे थे।

गड़रिये ने कहा, 'इसी अनमोल खजाने के बल पर मैंने राज की माया और सिंहासन को तिनके बराबर समझा। पर आप लोगों की नज़र में इसकी कोई कीमत नहीं, इसीलिए मैं दिखाने से झिझक रहा था। मैं रोजाना दो घड़ी अपने इस खजाने को सँभालता था कि कहीं माया-जाल में फँसकर अपने सच्चे सुख को भूल न जाऊँ। आपने मुझे डिगाने की काफी कोशिश की, पर मैं बचा रहा। मैं जिस सुख के सोपान पर पहुँचा हूँ, वहाँ आपका सुख मेरे लिए फकत दुख है। मैं खुद इस बन्दिश से छूटने को कसमसा रहा था। आपने शक करके मेरा भला ही किया। कैद से जल्द ही पिण्ड छूट गया। वह खेजड़ी, वे झरने, वो उगता सूरज, वे तारे और वह टेकरी मुझे कब

से बुला रही है! इतने दिन सुना-अनसुना करके मैं आपके कहे-कहे यह नरक भुगतता रहा।'

राजा की जैसे जान ही निकल गयी। काठ बना, चुपचाप खड़ा रहा। किस पर गुस्सा करें! गड़रिये ने कोठरी खोलकर उसे दिवालिया कर दिया। न कोठरी का खजाना सम्भालने की उसमें शक्ति है, न तख्तोताज के कूड़े को छोड़ने की हिम्मत। वो क्या करे?

आपके जवाब के इन्तजार में--
शिवसिंह नयाल, अन्विता
'अलारिप्पु'
बी-६/६२, पहली मंजिल, सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली-११००२६, दूरभाष : ६०६३२७

ज्योति लेजर टाइपसेटिंग
३/१ ईस्ट गुरुअंगद नगर, दिल्ली-६१